आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2653 • उदयपुर, गुरुवार 31 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सिरमौर, हिमाचल प्रदेश में दिव्यांगों को राहत का उपक्रम

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 13 मार्च 2022 को ज्ञानचंद गोयल, धर्मशाला सिरमौर हिमाचल प्रदेश में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता नव शिव शक्ति दुर्गा मंडल क्लब रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 210, कृत्रिम अंग माप 15, कैलिपर्स माप 14, की सेवा हुई तथा 09 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अरुण जी गोयल (समाज सेवी), अध्यक्षता श्रीमान सातीश जी गोयल (समाज सेवी), विशिष्ट अतिथि श्रीमान सचिन जी (समाज सेवी) रहे। डॉ.सचिन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री डॉ. अरविन्द जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री भगवती जी (टेक्निशियन) शिविर टीम में श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री

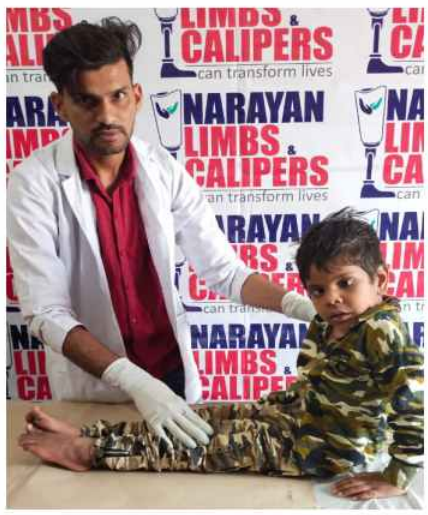

हरीश सिंह जी रावत, श्री देवीलाल जी मीणा (सहायक), श्री मुन्ना सिंह जी (फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

गाडरवारा, जिला नरसिंहपुर (म.प्र.)में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 13 व 14 मार्च 2022 को प. दीनदयाल उपाध्याय सभागृह, शनि मंदिर के आगे गाडरवारा में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता धनलक्ष्मी मर्चेन्डाइज प्रा. लिमिटेड रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 406, कृत्रिम अंग माप 116, कैलिपर माप 16 की सेवा हुई तथा 78 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री दीपक जी शर्मा (निदेशक धनलक्ष्मी मर्चेन्डाइज, प्रा. लिमिटेड), अध्यक्षता श्रीमान् समर सिंह जी (निदेशक धनलक्ष्मी मर्चेन्डाइज, प्रा. लिमिटेड), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् शमशेर सिंह जी (प्रबंधक धनलक्ष्मी मर्चेन्डाइज, प्रा. लिमिटेड), श्रीमान् दीपेश जी (उद्योगपति), श्रीमान् विजयराव जी (समाज सेवी), श्रीमान् अनूप जी (उद्योगपति), श्रीमान् धर्मेन्द्र जी (निदेशक धनलक्ष्मी मर्चेन्डाइज, प्रा.

लिमिटेड), श्रीमान् रूद्रप्रताप सिंह जी (सीनियर मैनेजर) रहे।

डॉ.आर.के.सोनी जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. नेहा जी (पी.एन.डो.), श्री किशन जी (टेक्निशियन), शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी, श्री गोपाल जी (सहायक), श्री अनिल जी (फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

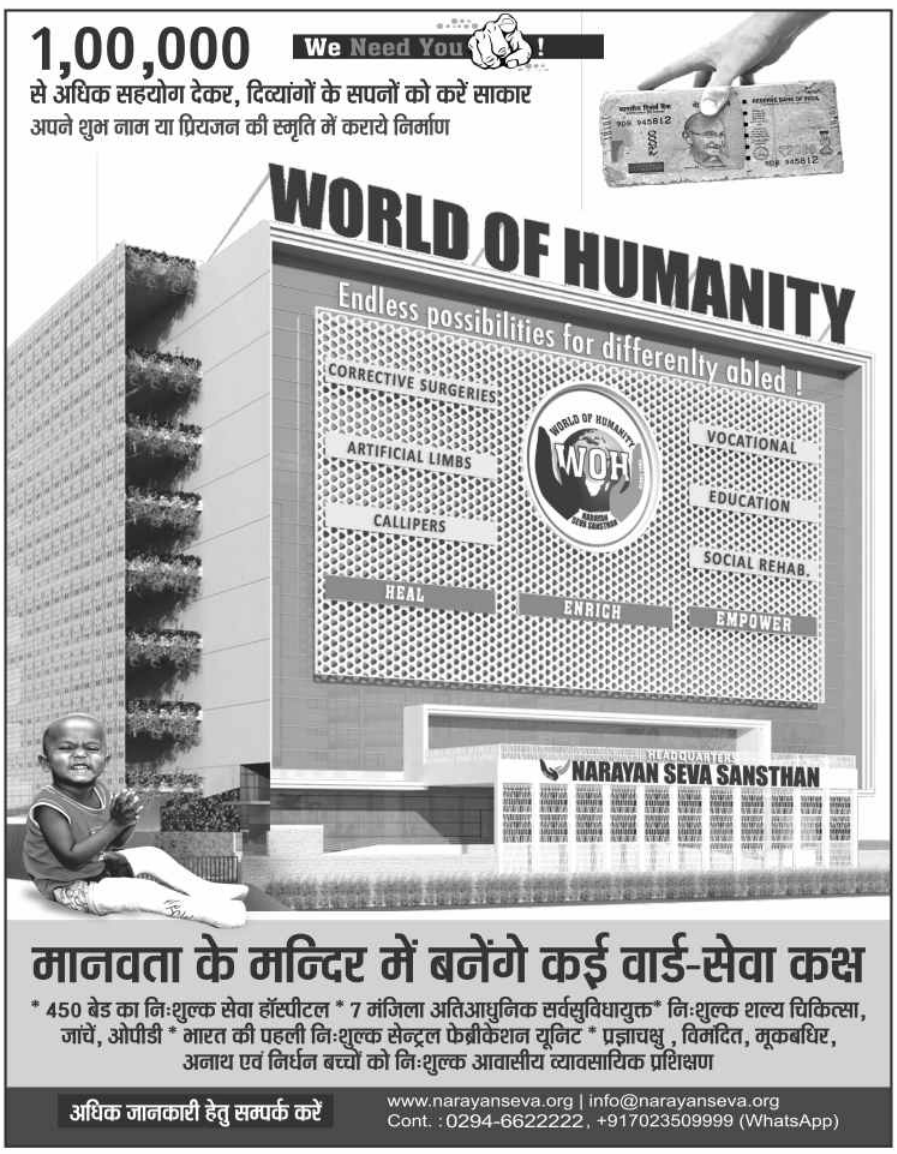

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
स्नेह मिलन समारोह
दिनांक : 03 अप्रैल, 2022
स्थान
राजपुरोहित समाज ट्रस्ट, खेतेश्वर भवन, 112 आमन कोईल स्ट्रीट, चेन्नई 79, प्रातः 10 बजे
श्री मैढ क्षत्रिय सभा "सभा भवन", 7/1/1, डॉ. राम मनोहर लोहया, सरणी, कलकत्ता, सांय 4 बजे
होटल शांति एण्ड मेरिज पैलेस, मेन मार्केट, धर्मशाला रोड़ , कांगडा, हि.प्र., प्रातः 11 बजे
इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।
+91 7023509999
+91 2946622222
पू. कैलाश जी 'मानव' संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान
'सेवक' प्रशान्त श्रीया अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

राहुल को लगे कृत्रिम पैर

शाहदरा– दिल्ली निवासी एवं संस्थान के विशिष्ट सेवा प्रेरक श्री रविशंकर जी अरोडा ने लॉक डाउन (कोरोना काल) के दौरान दोनों पांवों से दिव्यांग एक युवक के कृत्रिम पैर लगवाए। दिल्ली के बदरापुर निवासी युवा क्रिकेट खिलाड़ी 2018 में जबलपुर मैच खेलने गए थे। लौटते समय चलती ट्रेन से नीचे गिर पड़े और पांव पहियों के नीचे आकर कट गए थे। राहुल को अब चलने फिरने में किसी सहारे की जरूरत नहीं है। उन्होंने संस्थान एवं व उसके विशिष्ट सेवा प्रेरक–अरोडा जी का आभार व्यक्त किया है।

नारायण सेवा में मिले सेवा और प्यार

ख्यालीराम–बौद्धदेवा निवासी कनीगवा जिला बदायूँ (उ.प्र.) के खेतीहर साधारण परिवार का बेटा नरेशपाल (19) दोनों पॉव से लाचार था। करीब ढाई साल की उम्र में बुखार के दौरान लगे इंजेक्शन के बाद दोनों पाँव लगातार पतले होते चले गए। बिना सहारे के लिए उठना, बैठना और खड़ा रहना भी मुश्किल था। मथुरा में इलाज भी करवाया परन्तु हालत वही रही। नरेश ने बताया कि हरियाणा में उसके परिवार से सम्बद्ध व्यक्ति ने नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में पोलियो चिकित्सा की जानकारी दी जिसका इलाज भी यहीं हुआ था। नरेश के साथ आए उसके भाई अभय सिंह ने बताया कि ऑपरेशन हो चुका है। हम पूरी तरह संतुष्ट हैं। दुनियाभर में संस्थान का प्रचार होना चाहिए ताकि हम जैसे गरीब लोग भी इसका लाभ ले सकें। इसके संस्थापक पूज्य 'मानव सा.' के जुग–जुग जीने की प्रभु से कामना करते हैं।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ये कथा संजीवनी बूटी की है। ये कथा खर–दूषण, की नहीं है। ये कथा है गिद्धराज से भेंट हुई 'बहुबिधि प्रीत बढ़ाई की।' ये कथा है

सिर बल जाउँ उचित अस मोरा।
सेवक धरम, परम कठोरा।।

भरतजी की और शत्रुध्न जी की, लक्ष्मणजी की है। जिन लक्ष्मणजी ने जनकजी को कहा– जनकराजा यदि मेरे राम भगवान आज्ञा कर दें तो पूरे ब्रह्माण्ड को कच्चे घड़े की तरह उठा के फोड़ सकता हूँ। ये कथा उस लीला की है कि, हमें सीखना चाहिये। हमें क्या सीखना चाहिये? कि जैसे शूर्पणखा के नाक–कान काट के भगवाने ने रावण को चुनौती दे दी। रावण सम्भल जा, तेरी बहन कुरूप हो गयी। और वो कुरूप बहन, कुरूप मन। मेरे मन में सुबह मैं स्वाध्याय कर रहा था कि, मन कुरूप तो शरीर भी कुरूप हो गया। भाव अच्छे है तो मन भी सुन्दर होता है।

अष्टावक्रजी महाराज आठ जगह से टेढ़े थे। जनकजी की सभा में जाते। जनकजी अकेले खड़े होते बाकी सब बैठे रहते और हंसने लगते, मुस्कराने लगते। तो अष्टावक्रजी जोर से हंसते हैं और वापस जाने लगते हैं। जनक जी कहते हैं– महाराज आप वापस क्यों पधारे और आप हंसे क्यों ? बोले– हंसा तो इनकी मूर्खता को देख के। ये जीव को नहीं समझते, जगत को नहीं समझते। ये ज्ञान–वैराग्य को नहीं समझते, माया को नहीं समझते। प्रभु को नहीं समझते। ये व्यवहार को नहीं समझते। इन्होंने मेरा टेढ़ामेढ़ा भारीर देख लिया। केवल मेरे शरीर को देखते वो तो चमार होते हैं। ये वो जाति के हैं जिनको चमड़ी से लेना–देना। चमड़ी कैसी ? गोरी है कि काली है ? अरे ! ये तो एक तो बाहरी त्वचा, एक अन्दर की त्वचा। बाहरी त्वचा जिसमें खून नहीं होता, लेकिन ऑक्सीजन होता है। अन्दरी त्वचा का जो खून होता है तो उसका प्रकाश पड़ता है तो कोई गुलाबी रंग की त्वचा वेईगी। यो सावलो वेईग्यों, यो तो तापक्रम रेगिस्तान रो रेवा वालो। अणुऊ कई लेणो देणो। आपणे लेणो देणो गुणांऊं।

आशीर्वाद

एक बार एक राजा के दरबार में राजकवि ने प्रवेश किया। राजा ने उन्हें प्रणाम करते हुए उनका स्वागत किया। राजकवि ने राजा को आशीर्वाद देते हुए उनसे कहा, 'आपके शत्रु चिरंजीव हो।' इतना सुनते ही पूरी सभा दंग रह गई। यह विचित्र सा आशीर्वाद सुनकर राजा भी राजकवि से नाराज हो गए, पर उन्होंने अपने क्रोध पर नियंत्रण कर लिया।

राजकवि ने भी इस बात का भान हो गया कि राजा उनकी बात सुनकर नाराज हो गए है। उन्होंने तुरंत कहा, 'महाराज क्षमा करें। मैंने आपको आशीर्वाद दिया, पर आपने लिया नहीं।' राजा ने कहा, 'कैसे लूं मैं आपका आशीर्वाद? आप मेरे शत्रुओं को मंगलकामना दे रहे हैं। इस पर राजकवि ने समझाया, 'राजन! मैंने यह आशीर्वाद देकर आपका हित ही चाहा है। आपके शत्रु जीवित रहेंगे, तो आप में बल, बुद्धि, पराक्रम और सावधानी बनी रहेगी। सावधानी तभी बनी रह सकती है, जब शत्रु का भय हो। शत्रु का भय होने पर ही होशियारी आती है। उसके न रहने पर हम निश्चिंत और लाहरवाह हो जाते हैं। हे राजन! मैंने आपके शत्रुओं की नहीं, आपकी ही मंगलकामना की है। राजकवि के आशीर्वाद का मर्म जानकर राजा संतुष्ट हो गए और उनके आशीर्वाद को स्वीकार किया।

सम्पादकीय

सेवा, सेवित और सेवक तीनों की एकरसता ही सामंजस्य कहलाती है। सेवा करने वाला सेवक है तो सेवा वह ढूँढ़ ही लेता है। सेवक जब सेवित की सेवा करता है तो सेवित को तो मात्र तात्कालिक लाभ ही होता है और वह समुपस्थित संकट से मुक्त हो जाता है, पर सेवक का तो हर प्रकार से कल्याण ही हो जाता है। सेवक का सेवाभाव कसौटी पर कसा जाकर सफलता के सोपान चढ़ने लगता है। सेवित से भी अधिक आनंदानुभूति सेवक को होती है।

वह अहोभाव से भर जाता है क्योंकि सेवित ने उसे सेवा का अवसर प्रदान किया है। यही भाव सेवक को और भी ऊँचे सेवा विचारों से भर देता है। सेवक के उत्थान में सेवित व सेवा दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः सेवा में सामंजस्य द्वारा ही एक ऐसा वातावरण बनता है जो प्राणिमात्र की सेवा का आधार, मानव जीवन की सार्थकता और धर्म की धारणा को पुष्ट करता है।

कुछ काव्यमय

सेवा के संगीत को, जो भी लेता साध।
मानवता होती मुखर, उपजे प्रेम अगाध।।
सेवा मन की साधना, है बंषी का नाद।
सेवक को रहता सदा, अपना वादा याद।।
जो भी सेवा कर रहा, अपने मन को खोल।
अपने मन की भावना, अपने मन के बोल।।
सेवा रूपी मृदंग का, होत रहत अभ्यास।
तभी सुनाई देत है, वाणी मन की खास।
जो सेवा करताल से, उपजे ऐसा गीत।
राम भजन होता रहे, बढ़े दीन पर प्रीत।।

सदुपयोग कैसे करें

बहुत लोग ऐसे हैं ....जो सोचते हैं, उनकी आवश्यकताओं की कोई सीमा नहीं.... जो पास में है, उसका दुगुना चाहिए..... दुगुने का चौगुना चाहिए...और इस तरह चाह अनन्त बढ़ती ही जाती है।

....दूसरी तरफ वे लोग हैं... उनकी भी चाहत है..... उन्हें भी मिलता है, पर ..... उनके पास कुछ भी टिकता ही नहीं..... वे तो अपना सब कुछ असहाय, निर्धन, दिव्यांग, वृद्धजनों की सेवा के लिए.... अपना सब कुछ देने को सदैव तत्पर रहते हैं.....उन्हें न नाम का मोह है.... न यश की लिप्सा है.... और न ही अपनी अहंता का दूसरों पर बलात् आरोपण... उन्हें केवल प्राणिमात्र की भलाई ही प्रिय है.... दूसरों के दुःखों का निवारण ही उनकी साधना है.... पूजा है.... ध्यान है।.. ..वे विरले ही हैं.... वे साधु हैं.....

भावनाओं के इस खेल के पीछे प्रभु की बहुत बड़ी शक्ति काम कर रही है.... प्रभु उन्हें भी दे रहा है..... जो केवल संग्रह

करना जानते हैं, न स्वयं उपयोग–उपभोग करते हैं.... न दूसरों की सेवा सहायता के लिए दान करते हैं.... उनका धन तो बस ....नाश की प्रतीक्षा में संग्रह किया पड़ा रहता है.... इसके विपरीत प्रभु उन्हें भी प्रभूत मात्रा में दे रहा है.... जो अपने पास संग्रह नहीं करके निर्धन, असहाय, दिव्यांग भाई– बहीनों व बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा करने में अपने धन का दान कर देते हैं.... दोनों को मिल रहा है..... पर यह रहता यहीं का यहीं है..... एक स्थान पर अनुपयोगी होकर निरर्थक पड़ा रहता हैं.... तो दूसरे स्थान पर सतत भ्रमण करता हुआ.....अनेक हाथ–पैरों की सहायता करता हुआ निरन्तर गतिमान.... वृद्धि को प्राप्त करता है..... ये हैं दो परिदृश्य..... प्रभु द्वारा उपलब्ध करवाई गई सम्पत्ति और वैभव के .....प्रभु की कृपा से प्राप्त हमारी सम्पत्ति का उपयोग–अनुपयोग, सदुपयोग– दुरूपयोग करना हमारे संस्कार, संकल्प और विवेक पर निर्भर करता है.... सब कुछ ब्रह्माण्ड में विहित है.... सब कुछ ब्रह्माण्ड में ही विलीन होता है.... अतः हम निरन्तर प्रार्थना करें सद्भाव और सेवा की ....हम ब्रह्माण्ड से अवश्य मांगे, कोमल–करुणामय भावनाओं का विस्तार, उनकी प्राप्ति पर पूरा यकीन, भरोसा तथा विश्वास.... और आप हम देखेंगे कि हमें वह सब प्राप्त हो रहा है.....जो हमने चाहा है.....जो हमने मांगा है, प्राणिमात्र की सेवा के लिए... मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा धर्म होता है। **– कैलाश 'मानव'**

आत्मसंतोष ही धन है

आत्मसंतोष ही सबसे बड़ा धन है। आवश्यकता से अधिक संग्रहित धन क्लेश का कारण बनता है, जो परिवार में विघटन लाता है। धन की तीन गति होती है–भोग, दान और नाश। यदि प्रथम दो गति धन को प्राप्त नहीं होती, तो वह धन अवश्य ही तीसरी गति को प्राप्त हो जाता है।

एक व्यक्ति के पास थोड़ी–सी जमीन थी। वह उस पर खेती करके अपना जीवन–यापन करता था। एक दिन साइबेरिया से एक व्यक्ति उसके पास आया और कहने लगा– तुम साइबेरिया में जमीन खरीद लो, वहाँ जमीन

कौड़ियों के दाम बिकती है। इस पर उस व्यक्ति ने अपनी थोड़ी–सी जमीन, जो उसके पास थी, बेच दी और साइबेरिया चला गया। वहाँ पहुँच कर लोगों से जमीन खरीदने के बारे में बात की। लोगों ने उसे बताया–तुम्हें जितनी जमीन चाहिए, उतनी जमीन तुम ले सकते हो, इसके लिए तुम्हें सूर्योदय होते ही इस स्थान से भागना है। जितनी जमीन पर तुम कदम रखोगे अर्थात् जहाँ तक तुम भाग कर जाओगे वो जमीन तुम्हारी होगी। परन्तु ध्यान रहे कि सूर्यास्त होने तक तुम्हें वापस इसी शुरुआती जगह पर वापस आना होगा। रात को उसने अपनी दूसरे दिन की पदयात्रा की व्यवस्था के बारे में सोचा और खाने–पीने आदि की व्यवस्था की। दूसरे दिन सूर्योदय की पहली किरण के साथ ही उसने अपनी पदयात्रा शुरू की। दोपहर 12 बजे तक वह दौड़ता चला गया, उसके मन में 'और जमीन ले लूँ' का भाव लगातार चलता रहा। वह मन ही मन सोचता रहा कि यहाँ के लोग कितने भोले और अच्छे हैं कि इतनी सस्ती जमीन दे देते हैं। बस दौड़ो और जमीन अपने नाम कर लो। 12 बजे वह लौटने के बारे में सोचने लगा, लेकिन अचानक उसके मन में और अधिक जमीन प्राप्त करने का लोभ जागृत हो गया तथा वह और आगे आगे जाता रहा। उसे भूख–प्यास की भी परवाह नहीं रही। उसने भोजन–पानी को बोझ समझ कर फेंक दिया, ताकि ज्यादा से ज्यादा दौड़ कर ज्यादा से ज्यादा जमीन ले पाए।

दोपहर दो बजे उसे विचार आया कि मुझे लौटना भी है और अपनी वापसी की यात्रा में तेज–तेज दौड़ने लगा तथा हाँफने लगा। दूर–दूर से उसे वे लोग दिखाई देने लगे, जो सुबह उसका उत्साहवर्द्धन कर रहे थे, अब वही लोग उससे कह रहे थे–जल्दी आओ, जल्दी आओ। बहुत अच्छे! तुम पहुँच जाओगे। वह सोचने लगा–कैसे भले लोग हैं, जो अपनी जमीन ऐसे ही दे रहे हैं और चाहते हैं कि मैं उस शुरुआती जगह पहुँच जाऊँ और मुझे इतनी सारी जमीन मिल जाए। इनसे श्रेष्ठ लोग और कहाँ मिलेंगे?

वह हाँफता–दौड़ता उस जगह से मात्र पाँच कदम दूर तक पहुँच कर गिर गया, लेकिन फिर भी सूर्य की अंतिम किरण तक उसने रेंगते–रेंगते अपनी अंतिम सीमा रेखा पर हाथ लगा दिया, किंतु यह क्या, उसी समय उसके प्राण–पखेरू उड़ गए। अब वे भले लोग हँसते हुए कहने लगे कि यहाँ आज तक किसी भी व्यक्ति ने जीवित रूप में जमीन का एक टुकड़ा अपने नाम पर नहीं किया है। सभी लोग तृष्णा में मरे जा रहे हैं।

आज के मानव की भी यही प्रवृत्ति है। वह अपनी जरूरतों से ज्यादा के संग्रह में लगा है। यदि हमारे पास आवश्यकता से अधिक धन संग्रहित है, तो उसे लोगों की मदद में लगा देना चाहिए। यही उस धन का सदुपयोग है। दान करने में संशय नहीं होना चाहिएं मनुष्य को सदैव पूर्ण विश्वास के साथ दान करना चाहिए।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

डॉक्टर ने लड़के का अच्छी तरह परीक्षण कर कैलाश को कहा कि लड़के के दोनों हाथ–पांव काटने पड़ेंगे, इनमें गेंगरीन हो गया था जिससे शरीर के दूसरे हिस्सों में भी फैलने की पूरी संभावना थी। डॉक्टर की बात सुन कैलाश सन्न रह गया, उसे डॉक्टरा पर पूरा यकीन था, वे क्षेत्र के मान हुए सर्जन थे। वे अगर कुछ कह रहे हैं तो सोच समझ कर ही कह रहे होंगे।

कैलाश को विचारमग्न देख डॉक्टर ने फिर कहा–जल्दी से निर्णय लो, हाथ–पांव तुरन्त नहीं काटे तो लड़के की जान नहीं बचेगी। कैलाश असमंजस में था, एक अनजान युवक जो उसे सड़क पर मिला था, उसकी मदद करते वह अस्पताल लाया था। यह संयोग ही था कि उस समय वह घर से निकल गया वरना घर पर उसे नींद आ जाती तो। कैलाश ने अपना अन्तर्द्वन्द्व डॉक्टर को बताया तो उन्होंने कहा कि शायद इस लड़के की जान बचाने को खातिर ही ईश्वर ने तुम्हें अपने घर पर सोते हुए को उठाया और इस तक पहुँचाया।

कैलाश को डॉक्टर की इस उक्ति से निर्णय लेने में मदद मिली, वह सोचने लगा कि लड़के के हाथ–पांव नहीं काटे तो वह मर जायेगा, हाथ–पांव काट दिये तो कम से कम इसका जीवन तो बच जायेगा। कैलाश ने निश्चय कर लिया और डॉक्टर को कह दिया कि आप ऑपरेशन करें। इतना बड़ा ऑपरेशन करने के पहले आवश्यक औपचारिकताएं पूरा करना जरूरी होता है। मरीज के रिश्तेदार को ऑपरेशन की जिम्मेदारी लेते हुए एक फार्म पर हस्ताक्षर करने पड़ते है। डॉक्टर ने यह फार्म कैलाश के आगे कर दिया। फार्म में लड़के से रिश्ता बताना जरूरी था। कैलाश ने पुछा यहां क्या लिखूं, फिर स्वयं ही बात दिया–मानवीय रिश्ता लिख दूं।

डॉक्टर ने कहा–सुबह तुम पिण्डवाड़ा से अनजान घायलों को लाये थे, उन्हें तो पुलिसवालों को अपना भाई–बताया तो इस बच्चे को अपना भतीजा बताने में क्या आपत्ति है।

अंश - 050

प्रसन्नता व स्वास्थ्य

प्रसन्नता जीवन को बेहतर बनाने की एक प्रक्रिया के समान है। यह एक व्यक्ति को न केवल सकारात्मकता की ओर लेकर जाती है, बल्कि उसे रोगों से भी दूर रखती है। प्रसन्नता आरोग्य जीवनशैली का मूल हिस्सा है। यह रोगियो को राहत देने तक में एक प्रभावी तरीका है। खरीदी गई चीजों की तुलना में अंदरूनी खुशी कहीं ज्यादा मायने रखती है।

पॉजिटिव चिंतन

तरीका एंव माहौल मिलकर शरीर में हार्मोन्स का स्त्राव निर्धारित करते हैं। पॉजिटिव चिंतन से सेरिटोनिन और डोपामाइन जैसे हैप्पी हार्मोन्स के स्त्राव में बढ़ोतरी होती है। मन बेहतर होता है।

1 इन तरीकों से बढ़ाएं खुशियां – यह कई रिसर्च में सामने आ चुका है कि पसंदीदा एक्टिविटी का मानसिकता पर प्रभाव पड़ता है।

2 तीन अच्छी बातें– दिनभर में आपने जो भी काम किए है, उनमें से तीन अच्छी बातें नोट करें। यह अभ्यास आपको रूटीन लाइफ में अंदरूनी खुशी देगा।

3 वॉलंटियर बनें– परिवार या सोसाइटी में आपको जो भी चीजें परेशान करती है, उनमें बदलाव लाने के लिए वॉलटियर बनें। कुछ न कुछ समाज सेवा जैसा काम करें।

4 डोनेशन की खुशी– दान करना हमेशा से ही सेल्फ–हैप्पीनेस के मामले में टॉप पर रहा है। अतः समाज में गरीबों या वंचितों को डॉनेशन देकर प्रसन्न रहें।

5 खुद मजबूत बनें– फिजिकल, सोशल, स्पोर्टिंग या कोई अन्य पंसदीदा स्किल आपकी मजबूती बन सकती है। दिन का कुछ समय इन्हें दे सकते है।

6 जीवन का लक्ष्य तय करें – क्वालिटी में सुधार करें।

व्यक्तिगत जरूरतों व मूल्यों के अनुरूप जटिल माहौल का प्रबंधन करने की क्षमता विकसित करें।

सार्थक लक्ष्यों की खोज करें व जीवन का उद्देश्य तय करें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

निज मन रहा न विश्वासी। ये विश्वास ने सब करवाया। पी. जी. जैन साहब ने कहा बाबूजी– आप मुझे चिट्ठी लिखो कि किस तारीख को आप कहाँ पधारोंगे? मैं गाड़ी लेकर हाजिर होऊँगा। आठ दस दिन पहले चिट्ठी लिख दी गई। 31 दिसम्बर को पी एण्ड टी कॉलोनी में खिडकी से मैंने देखा कि कोई एक बाबू जी सफेद गोरे से कलर के सफेद कपड़ा जब्बा कुर्त्ता पहने हुए, उनके साथ में एक युवा भी एक कम उम्र के भाई और कार लेकर आते हैं। किसी को पूछ रहे कि कैलाश जी कहाँ रहते हैं? गेट के पास किसी को पूछ रहे हैं कि मैं कैलाश जी के लिये आया हूँ। भगवान ने प्रेरणा दी, मैं दौड़ा–दौड़ा गया सोचा, वो अपनी नारायण सेवा को पूछ रहे हैं, मैं क्या कहूँ?

इसी दृष्टा भाव को मजबूत करने के लिये, ये पानी का बुलबुला ये नित्य नहीं है। पैदा होता है और समाप्त हो जाता है– पानी का बुलबुला। उत्पाद और व्यय जैसे मेरे देह–देवालय के अरबों खरबों बुलबुले पैदा हो गये, और मर गये, यह प्रक्रिया निरन्तर जन्म से चली आ रही है।

प्रति एक सैकण्ड में एक लाख बुलबुले पैदा होते हैं देह धारा में और विचार धारा में भी। विचारों में कुछ बदलाव आता है, जो माइंड डाइवर्ट हो जाता है। कभी प्रेम होता है, तो आँखों में जल भर आ जाता है। ये जल कैसे भर आता है? किसी को देखकर आँखें प्रसन्न हो जाती हैं। हाथ आगे बढ़ जाते हैं, गले लगाते हैं।

चार मिले चौसठ खिले,
बीस खड़े कर जोड़।
पीजी जैन साहब से
कैलाश मिले,
खिल गये लाख करोड़।।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 403 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023